जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५० वे ❖ अंक १० वा ❖ जून २०१९ ❖ वीर संवत २५४५ ❖ विक्रम संवत २०७५

या अंकात

	पान नं.
● वाचकांचे मनोगत.....	१५
● अहिंसा मीट : एक भ्रामक नाम	१९
● कव्हर तपशील	२४
● अंतिम महागाथा	
✲ ३ – वर्धमान	३१
✲ ४ – सन्मति	३५
● सुखी जीवन की चाबियाँ–आठ दोष त्याग	३९
● श्री शंखेश्वर तीर्थ	४९
● मिठास से बोलिए, राज कीजिए	५१
● विराट वागरणा	५३
● Fatty Liverदुर्लक्षीत आजार	५५
● धारणाओं का हो वैज्ञानिक विश्लेषण	५७
● एक छोटीसी बात	५९
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा – ओजस्वी जीवनबणा	६१
● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा	६३
● सर्व सामान्यापर्यंत जैन इतिहास व जैन तत्वज्ञान पोहचविण्याचे प्रभावी उपाय	७३
● चलती रहे जिंदगी – ये तो सच है कि भगवान है –२	७५
● लॅब मीट को अहिंसा मीट न कहें	७९
● ऊंचा ऊया जीवनमान – बदलूया जीवनशैली	८१
● ज्ञाताधर्म कथा:आगम एक विषय अनेक	८३
● कडवे बोल	८७
● डायमंड डायरी	९१
● गुरु सौभाग्य प्रकाश एज्युटेक फाऊंडेशन	९४
● जैन समाज अभ्यास आयोग निर्माण व्हावा	९४
● पुण्य की आय करमुक्त	९६
● महावीर जैन विद्यालय – लासलगां	९६
● डॉ. सागरमल जैन – पुरस्कार	९७
● मुनोत जैन विहारधाम उद्घाटन	९९
● महावीर इंटरनॅशनल केंद्र – शिरुर	१००

● जयती जैनम साधना तीर्थ – भिवरी १०१
● महावीर भवन, अहमदनगर १०३
● श्री. प्रीत बाबेल, पुणे – पुरस्कार १०४
● पुणे चातुर्मास आत्म ध्यान शिबीर १०५
● श्री. अक्षय संचेती, पुणे – पुरस्कार १११
● मानव मिलन महिला विभाग १११
● अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव–चिंचवड ११२
● कैन्सर डायग्नोस्टीक सेंटर, पुणे ११३
● व्हिजन कन्स्ट्रक्शन – पुरस्कार ११३
● तिलोक जैन ज्ञान प्रसारक मंडळ–पाथर्डी ११४
● कडवे प्रवचन ११५
● हास्य जागृति ११६
● धम्मो मंगल मुक्कीठ्ठं ११७
● अनवस्थित आत्मा : अपना ही शत्रु १२३
● सहने की शक्ति देना मेरे देव! १२५
● विविध धार्मिक व सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५०० रु.

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

● www.jainjagruti.in
● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

● वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
● आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA — Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 — IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१, www.jainjagruti.in**

Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

❖ **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९, ९४२२८३२८४९
❖ **पुणे शहर ❖ जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
❖ **पुणे शहर ❖ कुर्डुवाडी –** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३०००००८१
❖ **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
❖ **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५ / ९३७३६८२१३७
❖ **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
❖ **सदाशिव पेठ परिसर, पुणे –** सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
❖ **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
❖ **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
❖ **खडकी, पुणे –** श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
❖ **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
❖ **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
❖ **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६ / ७२७२९७२९९९
❖ **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
❖ **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
❖ **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
❖ **बीड –** श्री. महावीर पन्नालालजी लोढा, मो. ९४२०५५६३२५
❖ **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७–२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
❖ **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत–फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
❖ **मुंबई खारघर–** श्री. मदनलालजी गांधी–मो. ९८२०५३६७९३
❖ **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३–२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
❖ **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
❖ **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
❖ **श्रीरामपूर –**श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
❖ **बारामती–** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२–२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
❖ **अमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
❖ **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
❖ **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
❖ **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
❖ **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
❖ **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१–२६९५४३३
❖ **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

॥ वाचकांचे मनोगत ॥
जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण...

जैन जागृति – गोल्डन ज्युबिली वर्षातील पहिला अंक, सप्टेंबर २०१८ पर्युषण अंका पासून वाचकांचे मनोगत 'जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण' या सदरात दरमहा आचार्य भगवंत, साधु-साध्वी महाराज, समाज बांधव यांचे आलेली पत्रे जैन जागृतित प्रकाशित केली जात आहेत. या सदरात प्रकाशित करण्यासाठी बरीच पत्रे, संदेश आमच्याकडे आली आहेत. यापैकी दरमहा काही पत्रे प्रकाशित केली जातील. सर्व पत्रे क्रमश: प्रसिध्द केले जातील. **– संपादक**

प.पू. उपाध्याय डॉ. विशाल मुनिजी म.सा.
जैन जागृति पत्रिको को आशीर्वाद

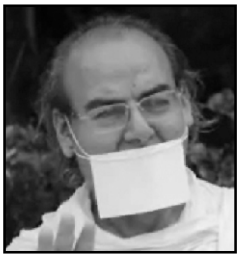

जैन जागृति की पचासवी स्वर्णजयंती के पावन प्रसंग पर, जैन जागृति परिवार के प्रत्येक सदस्य को हार्दिक हार्दिक बधाइयाॅ एवं मंगलकामनायें हैं ।

किसीभी व्यक्ति या वस्तुका, सफल एवं सार्थक ५० वर्ष व्यतीत हो जाना अविस्मरणीय ऐतिहासिक प्रसंग हो जाता है । सो जैन जागृति मासिक ने अपना स्वर्णिम इतिहास स्थापित कर लिया है, यह हार्दिक प्रसन्नता का विषय है ।

५० वर्षपूर्व कर्मठ, सुश्रावक समाजहित चिंतक, श्रीमान कांतिलालजी चोरडिया ने जैन जागृति पत्रिका को समाज सेवा में समर्पित किया । उनकी कर्मठता एवं कर्तव्य के कारण मासिक पत्रिका की समाज सेवा यात्रा अबाध गति से चलती रही कि अब उसकी ५० वी वर्षगाठ सम्पन्न हो रही है । श्रीमान संजय चोरडिया तथा सौ. सुनंदा चोरडिया ने पूज्य पिताश्रीजी के करकमलों द्वारा संचलित जैन जागृति को इस कदर अपनापन दिया की बडी ही सफलता के साथ मासिक पत्रिका की विकास यात्रा उत्तरोत्तर शिखर की ओर आगे बढती गयी। आज इस पत्रिका की लोकप्रियता से पूरा जैन समाज गौरवान्वित हो रहा है ।

इस मौके पर सागर चोरडिया एवं सौ. प्राची चोरडिया को बधाइयाँ एवं मंगलकामनायें देना अति आवश्यक है कि जिन होनहार बच्चों ने अपनी अद्भूत प्रतिभा से अपने माँ, बाप, दादा दादी सबको नयी पहचान दी है एवं पूरे जैन समाज के गौरव को अपनी विशेष प्रतिभा से चार चाँद लगाया है ।

शुभाकांक्षी
डॉ. विशाल मुनि, जैन स्थानक बिबवेवाडी

प.पू. श्री. प्रशांतऋषिजी म.सा.
जैन जागृति पत्रिका को आशीर्वाद

जैन जागृती इस सर्वप्रिय मासिक ने सुवर्ण महोत्सवी वर्ष में पदार्पण किया है यह हम सभी के हर्ष का, समाधान का और गौरव का विषय है । एक धर्मनिष्ठ और कर्मनिष्ठ सुश्रावक स्व. श्री कांतिलालजीसा चोरडिया ने इस मासिक की स्थापना की, शुरुआत की । उनका व्यक्तित्व बहुतही उमदा था । सतत हसतमुख और अपने कार्य के प्रति सतत जागृत रहते थे । संघ,

समाज के लिए बहुत कुछ करने की सदिच्छा सतत उनके अन्तरमानस में रहती थी । प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष में बहुत सारे सत्कार्य उनके हाथोंसे होते ही रहते थे । कइयोंके वे प्रेरणास्थान और आदर्श थे । 'सादा जीवन उच्च विचार' ऐसा उनका उच्च व्यक्तित्व था । 'जैन जागृति' मासिक के माध्यम से उन्होंने जन जागरण और जैन जागरण का कार्य बड़े पैमाने पर किया । और फिर 'बाप से बेटा सवाई' यह उक्ति सार्थक की संजयजी चोरडिया ने । संजयजी और पुत्रवधू सुनंदाजी ने तो इस लगाए हुए पेड का इतनी लगन, जिद्द, परिश्रम और अन्त:करण से सिंचन किया कि वह पेड़ और अधिक हरा भरा हुआ फला फुला और जन जन के लिए उपयोगी उपकारी होकर आनंददायी सिद्ध हुआ । हमारे भाई और भाभी ने इस कार्य में चार चाँद लगाए है । जैन जागृति मासिक अपने नाम के अनुरुप सतत जागृति का ही शंखनाद करता आया है और कर रहा है । उसमें सारा सारभरा, सार्थक और प्रेरणादायी ज्ञान होता है । एक खास बात कहुँ, मेरी दीक्षा के पूर्व से, बचपन से ही चोरडिया परिवार के साथ बहुत नजदीक के, आत्मियता के संबंध रहे है । कारण था हमारी माता चन्दनबाई बागमार (साध्वी वैराग्यसुधाजी म. सा.) जो धर्मकार्य में और धार्मिक शिक्षा प्रदान करने में अग्रसर थे । जैन जागृति यह मासिक जन जागरण और जैन जागरण का कार्य यूँ ही करता रहे मंगल कामना, मंगल भावना ।

– प्रशांतऋषिजी

महत्त्वपूर्ण भूमिका

किसीभी पत्रिका का ५० वर्ष का सफर अपने आप में उपलब्धि है । विशेषकर 'जैनजागृति' ने महाराष्ट्र के छोटे छोटे गाँवों में भी पहुँचकर लोगों को धर्म एवं तत्वज्ञान का संदेश देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है । मेरे 'शाश्वतधर्म' के २२ वर्षीय सम्पादन काल में आदरणीय श्री कान्तिलालजी चोरडिया से नियमित सम्पर्क रहा एवं वर्तमान में श्री संजयजी भी उसे कायम

रखे हुए है । आपके द्वारा 'जैन जागृति' के प्रकाशन से जिनशासन की निरन्तर सेवा होती रहे, यही शुभकामना।

प्रेषक : जे.के.संघवी, ठाणे
मो. : ९८९२००७२६८

जैन हिताची जपवणूक करणारे

माननीय संपादक महोदय, जय जिनेंद्र !

समस्त जैन समाजाच्या अंतर्बाह्य जागृतिसाठी, ५० वर्षापूर्वी स्व. कांतीलालजींनी लावलेल्या रोपट्याचं, आज ज्या महावटवृक्षात रुपांतर झालं आहे, ते हे 'जैन जागृति' मासिक ! हे वर्ष म्हणजे या सुवर्णमहोत्सवी वाटचालीतील ऐतिहासिक टप्पा ! स्व. कांतीलालजींचे पश्चात या वृक्षसंवर्धनामध्ये आणि बहरण्यामध्ये सांप्रत सपांदक संजयभाई व सुनंदाबेन या दंपतीचं मोठं महत्वाचं योगदान आहे.

"For the Jains - of the Jains - From the Jains"

या तत्वावर चालणारं, जैन हिताची जपवणूक करताना जनजागरण करणारं, लोकांभिमुख, प्रगतिशील असं सर्वात अग्रणी जैन मासिक आहे.

Amazing secret of successful publication is "Less is a lot more !" Content should not be time consuming; at the same time, should be heart touching, interesting and useful for life building with values !

जैन जागृति या मासिकाच्या भरघोस यशस्विते मागची ठळक गुणवैशिष्ट्ये –

१) प्रकांडपंडित जैन आचार्य मुनिवरजी, विद्वत्ताप्रचूर साधू-साध्वीजी इ. ची वाणी व महानुपयोगी अनुभवी मार्गदर्शन...

२) समाजातील विविध क्षेत्रीय अभ्यासू-

सिद्धहस्त महानुभवांचे वाचनीय अनुकरणीय लेख...

३) काल सापेक्ष, उपयुक्त असे जीवनाभिमुख विषय वैविध्यपूर्ण लेखन सुखी-आनंदी संपन्न आयुष्याबद्दल व जिव्हाळ्याच्या विषयावर व्यक्त होणारे विचार-विचारमंथन...

४) विविध स्तरांमधील जैन समाजबांधवासाठी धार्मिक, अध्यात्मिक, वैचारिक, मानसिक असं विविध विषयांकित ज्ञानभांडार, वैयक्तिक व सामाजिक समस्यांची उकल व समाधान !

५) भ. महावीर स्वामी जन्म कल्याणक, पर्वराज पर्युषण, दीपावली या निमित्त विशेषांक, संस्कृतिक संपन्न भारत वर्षामधील सर्व महत्त्वाचे सणवार, तिथी विशेष, दिन विशेष इ. नुसार प्रासंगिक लेख दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त...

६) सर्वांगसुंदर अंक, शुद्ध सुबक छपाई, सरळ प्रभावी रचना...

७) लक्षणीय वाचकप्रियता, जैनतत्व-मुल्याधिष्ठित म्हणून लोकप्रियतेच्या निकषांना पात्र...

८) साहित्य वाङ्मयाचे बहुतेक प्रकार कथा, काव्य, चरित्र, ललित निबंध व विनोद सुध्दा अशा विपुलतेचा लक्षणीय समावेश....

९) गौरव कार्यांकित व्यक्ति विशेषांच्या यथोचित समाजाभिमुख कार्यांचा परिचय व सन्मानवृत्त.

१०) नवोदित बहुगुणी यशस्वी तरुण-तरुणींची प्राविण्यप्राप्ती, नावलौकिक इ. ची माहिती जागोजागीच्या सामाजिक घडामोडी..

११) विवाहेच्छुक वधू-वरांसाठी अनुरुप विश्वासार्ह व्यासपीठ....

१२) खुसखुशीत नर्म विनोदी हास्य रंग....

१३) विवादास्पद राजकीय सामाजिक विषयांकित लेखन, तर्कहीन, निराधार-प्रक्षोभक माहिती, लेख न छापण्याबाबत काटेकोर जागरुकता..

१४) प्रकाशनामध्ये सातत्य ठेवल्यामुळे अंक नियमित व वेळेत...

१५) वाढत्या महागाईत्तही शुल्कवृद्धी न करता, दर्जा कायम ठेऊन, वाजवी मुल्य आकारणीमुळे मासिकाची यशस्वी घोडदौड...

१६) प्रासंगिक विपरित परिस्थिती मध्येही नियमितपणे प्रायोजक मिळत राहणे, ही विश्वासार्हता व लोकप्रियतेची लक्षणे....

अजूनी अशी अनेक 'शक्ति-बलस्थाने' उदधृत करता येतील अशा या बहुगुण संपन्न मासिकाचा गेली जवळपास ३० वर्षे मी सभासद वाचक आहे. या मासिकामध्ये वेळोवेळी माझे अनेक लेख, कविता प्रसिद्ध झाल्या आहेत. या मासिकाच्या नीरक्षीरविवेकी वृत्तिच्या मा. संपादकांनी माझ्या विचार स्वातंत्र्याला सन्मानपूर्वक प्रकाशित केल्याचा मला अभिमान वाटतो.

सामाजिक बांधिलकी जपणाऱ्या आणि ''जैन जन सुखाय जैन जन हिताय'' अशी जैन बांधवहिताची जपवणूक वृद्धि करणाऱ्या या सुवर्णमहोत्सवी ''जैन जागृति'' मासिकाला, उत्तरोत्तर हिरकमहोत्सवी व पुढे शतकोत्तर यश-समृद्ध वाटचालीसाठी भरघोस शुभेच्छा!

संजयभाई-सुनंदाबेन व कुटुंबीयांना, या मासिकाच्या जनजागृति कार्यसिद्धीसाठी कृपावंत भगवंत सदासर्वदा पाठीशी राहो, ही मनोमन सदिच्छा!

करण्या जैन धर्म जागृति,
ज्यायोगे साधावी समाज प्रगति ।
घडो तव हस्ते, कल्याणकारी सत्कृति,
याकामी देवो ईश्वर तुम्हा, सामर्थ्य नि सन्मति ।।

।। जैनं जयति शासनम् ।।

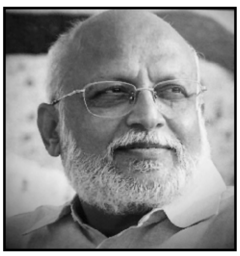

प्रेषक : विनोद कां. शहा,
'सर्वस्व', पुणे
मो. : ९८२२०४६६६२

‘अहिंसा मीट’ : एक भ्रामक नाम

लेखक – डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केंद्र)

बाजारवाद और उपभोक्तावाद ने जीवन, समाज और संस्कृति के अनेक क्षेत्रों को नकारात्मक तरीके से प्रभावित किया है। सच्चे-झूठे विज्ञापन और अंधाधुंध विपणन (मार्केटिंग) के जरिये बाजार में ऐसे भ्रम पैदा किये जाते हैं कि आम आदमी कुछ शातिर लोगों की चाल समझ ही नहीं पाता है, अपितु वह झाँसे में आ जाता है। परिणामत: आदमी अपनी स्वस्थ और किफायती जीवनशैली को छोड़कर बाजार की कई गलत चीजों या हानिकर विकल्पों को अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी अपनाने लगता है।

कुछ दशकों पूर्व भारत में पोल्ट्री जैसे क्रूरतापूर्ण धंधे का जाल बिछाने के लिए बाजारवाद के षड़यंत्रकारियों ने अण्डे को शाकाहार कहकर एक महाझूठ फैलाने की कुटिल कोशिश की। शाकाहार प्रधान भारत में मांस व्यापार और मांसाहार को बढ़ावा देने के लिए ऐसे अनेक कुत्सित प्रयास समय-समय पर होते रहे हैं। कभी पोषण के नाम पर तो कभी आदमी के भोजन चयन के अधिकार के नाम पर भारतीय अहिंसा संस्कृति को चोट पहुँचाने के प्रयास होते रहे हैं।

जाने-अनजाने ऐसे किसी प्रयास में यदि अहिंसा के अलम्बरदार ही लग जाए तो दुखद आश्चर्य होता है। ऐसी ही एक खबर अगस्त-२०१८ में आई, जिसमें केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री मेनका गांधी ने ‘क्लीन मीट’ का जिक्र करते हुए कहा कि अब भारत ‘अहिंसा मीट’ के लिए तैयार है। अपने भ्रामक शब्दों के समर्थन में शाकाहार प्रचारिका मेनका ने कहा कि किसी जानवर की जान लिये बिना ही ऐसा मांस प्रयोगशाला में तैयार होगा। गौरतलब है कि इस तकनीक के द्वारा ‘अहिंसा मांस’ जानवरों की स्टेम सेल (मूल कोशिका) से तैयार किया जाएगा।

मेनका ने यह बात २४ अगस्त को हैदराबाद में ‘फ्यूचर ऑफ प्रोटीन : फुड टेक रेवॉल्यूशन’ (प्रोटीन का भविष्य : भोजन तकनीक क्रांति) विषय पर आयोजित कार्यक्रम में कही। अपने भाषण में उन्होंने यह भी कहा कि इससे गोहत्या तथा इसके कारण होने वाली लिंचिंग भी रुकेगी। उनके इस कथन पर सहमत नहीं हुआ जा सकता। कारण यह है कि मांसाहार का सम्बन्ध सिर्फ गोहत्या से ही नहीं है। मांसाहार के कारण अनेक प्रकार के लाखों प्राणियों की रोज ही हत्याएँ होती हैं। इसके अलावा शाकाहारिता और लिंचिंग (मारपीट) में कोई सम्बन्ध नहीं है। शाकाहारिता तो अनुशासन, सहअस्तित्व और सद्भावनाओं की विस्तारक श्रेष्ठ जीवन-पद्धति है।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा कि भारत की प्रयोगशालाओं में ऐसा ‘क्लीन मीट’ (साफ मांस) तैयार करने की तकनीक मौजूद है, जिसे पाँच वर्षों में बाजार में लाने का लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने एक निजी सर्वे का हवाला भी दिया और कहा कि ६६ प्रतिशत लोग परम्परागत मांसाहार के साथ ‘अहिंसा मांस’ को शामिल करने के लिए तैयार है, वहीं ५३ प्रतिशत लोग ‘अहिंसा मांस’ मिलने पर पारंपरिक मांसाहार छोड़ने को तैयार है। ४६ प्रतिशत लोगों ने यह भी कहा कि ‘अहिंसा मांस’ बाजार में आने लगेगा तो वे रोज ऐसा मांस खाएँगे।

स्पष्ट है कि मांसाहारी भी मांस के लिए दृश्यमान और प्रत्यक्ष क्रूरता को नापसन्द करते हैं। सवाल यह है कि उन्हें किसी लुभावने नाम के साथ ‘परोक्ष क्रूरता’ का भागीदार क्यों बनाया जाए? मांस के ऐसे नामकरण

से हमारी आहार संस्कृति की शुद्धता को चुनौती मिल सकती है। उक्त कार्यक्रम में शामिल विशेषज्ञों ने कहा कि कुछ दिनों में 'बीयर मेकिंग' की तरह ही 'मीट मेकिंग' का भी बड़ा बाजार होगा। भारतीय आहार की शुद्धता और सात्विकता पर वैसे भी अनेक आक्रमण हुए और हो रहे हैं। 'मीट-मेकिंग' के बाजार से भी यह आक्रमण नए रूप में हो सकता है!

कमाई और भलाई के नाम पर बाजार में अनेक लुभावने शब्द फेंके और इस्तेमाल किये जाते हैं, जिनसे आम आदमी भ्रमित होता है। इस समाचार के शब्द और वाक्य भी अनेक भ्रम पैदा करते हैं और भारत की शुद्ध, सात्विक व शाकाहारी जीवनशैली के साथ खिलवाड़ करते हैं। जब हम शाकाहारी जीवनशैली के सन्दर्भ में समाचार के भ्रांतिपूर्ण शब्दों पर विचार करते हैं तो अनेक सवाल खड़े होते हैं।

'अहिंसा मीट' शब्द, किसी भी प्रकार के मांस के लिए पूरी तरह से अस्वीकार्य है। यह एक ऐसा ही कुटिल नामकरण है, जैसा अण्डे के साथ शाकाहार शब्द लगाकर किया गया था। अनेक परम्परागत शाकाहारी लोग भी उस नाम के झाँसे में आकर अण्डे को भक्ष्य समझने की भूल कर बैठे थे। 'शाकाहारी अण्डा' जैसे सर्वथा गलत नाम से भारत की निरामिष थाली को अपवित्र करने की साजिश रची गई। अब 'अहिंसा मीट' के नाम पर कुछ ऐसी ही गैर-जरूरी कोशिश नजर आती है।

समाचार में यह स्पष्ट कहा गया है कि 'अहिंसा मीट' का निर्माण जानवरों की मूल कोशिकाओं (स्टेम सेल्स) से किया जाएगा। जैव प्रौद्योगिकी (बायो टेक्नोलाजी) के अन्तर्गत स्टेम सेल तकनीक चिकित्सा-विज्ञान में हितकारी सिद्ध हो रही है। लेकिन यहाँ स्टेम सेल तकनीक से मानव के भोजन हेतु मांस तैयार करने का विचार है। यह विचार भोजन के साथ जुड़ी व्यक्ति की धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक मान्यताओं को तोड़-मरोड़ सकता है।

कोई भी तथ्य या ज्ञान वैज्ञानिक दृष्टि से सत्य हो सकता है, लेकिन यदि वह मानवीय, नैतिक और सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य नहीं है तो उसके प्रयोग और व्यवहार को धर्म, नीति, समाज या शासन के द्वारा अनुशासित या निशिद्ध किया जाता है। वैज्ञानिक जगत में भी अनेक प्रकार की मानवीय और नैतिक मर्यादाओं पर विचार किया जाता है। अत: मानवीय सम्बन्ध और भोजन के बारे में भी नैतिक मर्यादाओं का खयाल रखा जाना चाहिए। विज्ञान का उपयोग इस प्रकार नहीं होना चाहिए कि कोई 'सामाजिक क्षोभ' या 'जैविक अराजकता' फैल जाए।

इस सम्बन्ध में क्लोनिंग का उदाहरण लिया जा सकता है। आधुनिक जीव-विज्ञान में क्लोनिंग, स्टेम सेल जैसी ही एक तकनीक है। विज्ञान जगत में इसे अलैंगिक प्रजनन भी कहते हैं। वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया कि पशुओं की कुछ प्रजातियों में नर-मादा संयोग के बिना ही प्राणियों की प्रतिरूपकीय उत्पत्ति संभव है। इसी शोध के आधार पर एक भेड़ को पैदा किया गया था। जिसका नाम डॉली रखा गया। डॉली भेड़ छह वर्ष तक जीवित रही। वैज्ञानिकों ने गाय, भैंस, ऊँट, मछली, बन्दर, घोड़ा अनेक पंचेन्द्रिय प्राणियों पर क्लोनिंग तकनीक का प्रयोग किये। ऐसे प्रयोग प्राणी विज्ञान शाखा के चर्चित समाचार बने। लेकिन जब मानव प्रतिरूपण (ह्यूमन क्लोनिंग) की बात आई तो दुनियाभर के धार्मिक, सामाजिक और शासकीय संस्थानों ने इसका विरोध किया। स्वयं वैज्ञानिक समुदाय ने भी ऐसे प्रयोग पर सवाल खड़े किये। बड़ा सत्य यह है कि विज्ञान और वैज्ञानिकों के कार्यों का मूल उद्देश्य भी मानव और मानवता का व्यापक कल्याण ही है, होना चाहिए।

स्टेम सेल एक ऐसी तकनीक है, जिसमें किसी भी प्राणी की मूल कोशिका से उसी प्राणी के किसी भी

घटक और अंग को विकसित किया जा सकता है। इस तकनीक से उस जानवर का मांस तैयार किया जाएगा, जिसकी मूल कोशिका बीज रूप में प्रयुक्त की जाएगी। स्पष्ट है कि जिसे 'अहिंसा मीट' नाम दिया जा रहा है, वह कतई अहिंसक नहीं होगा। ठीक है, ऐसे मांस को तैयार करने में बूचड़खानों जैसा खून-खच्चर नहीं होगा तथा बाहर में कोई क्रूरता भी नहीं दिखाई पड़ेगी। लेकिन मांस तो मांस ही है। वह शाकाहारियों के लिए तो सर्वदा और सर्वथा अस्वीकार्य ही है और रहेगा।

क्लोनिंग की तरह स्टेम सेल से जीवोत्पत्ति को भी अलैंगिक प्रजजन कहा जा सकता है। जैन शास्त्रों में इस प्रकार से उत्पन्न जीवों को अगर्भज प्राणी और सम्मूर्च्छिम जीव कहा जाता है। प्राणियों के जीवित या मृत शरीर में, उनके अंश या उससे निसृत या प्राप्त पदार्थ में सम्मूर्च्छिम जीव उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे अगर्भज प्राणियों में मनुष्य भी होता है। जैन ग्रंथों में ऐसे स्थल या पदार्थ भी गिनाए गए हैं, जिनसे सम्मूर्च्छिम जीव पैदा हो सकते हैं। ऐसे पदार्थो में मल, मूत्र, शुक्र, रक्त, श्लेष्म, मृत कलेवर आदि १४ नाम गिनाए गए हैं।

इसके अतिरिक्त जैन ग्रंथों में नौ प्रकार की योनियाँ भी बताई गई हैं, जहाँ जीवों की उत्पत्ति हो सकती है। ये जीवोत्पत्ति स्थान हैं- सचित्त, अचित्त, मिश्र, उष्ण, शीत, शीतोष्ण, संवृत्त (ढँके), विवृत्त और मिश्र (संवृत्त-विवृत्त)। स्पष्ट है कि जीवों के स्वभाव और वर्ग के अनुसार जीवोत्पत्ति विभिन्न प्रकार के स्थानों पर होती है। प्रयोगशाला में भी सम्बन्धित प्राणी के लिए अनुकूल वातावरण बनाकर जीव उत्पन्न किये जा सकते हैं। जीवोत्पत्ति के ये स्थान गर्भज और अगर्भज, दोनों प्रकार के जीवों के लिए हैं। वैसे जैन दर्शन और अन्य भारतीय दर्शनों में चौरासी लाख प्रकार की जीवयोनियाँ बताई गई हैं, जिनमें जीवों के उत्पत्तिस्थान के प्रचुर विकल्पों पर विचार किया गया है। लेकिन समझने के लिए उन्हें विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है।

जैन दर्शन और आधुनिक विज्ञान, दोनों अपनी-अपनी शब्दावली में यह स्वीकार करते हैं कि अनेक प्रकार से प्राणियों की उत्पत्ति संभव है। नर-मादा संयोग के बिना एवं गर्भ के बिना भी प्राणियों की उत्पत्ति होती है। प्रसंगवश यहाँ उन लोगों का यह पोचा तर्क भी खारिज हो जाता है कि पौल्ट्री फॉर्म में अण्डे उत्पन्न करने वाली मुर्गियों को मुर्गों का संसर्ग नहीं मिलता है, इसलिए अनिषेचित अण्डा शाकाहार है! सामान्य बोध (कॉमन सेंस) से भी अण्डे को शाकाहार कहना सर्वथा मिथ्या है। वस्तुतः 'शाकाहारी अण्डा' एक गलत और अवैज्ञानिक शब्द-प्रयोग भी है। कुछ शिक्षित लोग भी ऐसे शब्द-जाल में उलझ जाते हैं। 'अहिंसा मीट' भी एक ऐसा ही भ्रामक नामकरण है।

जहाँ तक स्टेम सेल तकनीक की बात है, वह प्राणी जगत के अलावा वनस्पति जगत में भी किसी न किसी रूप में खेती-बाड़ी और बागवानी में प्रयुक्त होती है। वनस्पति की कलम (टहनी) से नया पौधा उगाने को 'पारम्परिक स्टेम सेल विधि' कहा जा सकता है। आधुनिक जीव-विज्ञान की दो मुख्य शाखाएँ हैं- वनस्पति विज्ञान और प्राणी विज्ञान।

वनस्पति विज्ञान में सभी प्रकार की वनस्पतियों का अध्ययन-अनुसंधान किया जाता है। उसमें कृषि और उद्यानिकी भी आ जाते हैं। वनस्पति विज्ञान की तुलना में प्राणी विज्ञान अधिक विस्तृत विषय है। जैन दर्शन की भाषा में प्राणी विज्ञान में बेइन्द्रिय प्राणियों से लेकर पंचेन्द्रिय प्राणियों तक का अध्ययन व अनुसंधान सम्मिलित है।

'अहिंसा मीट' शब्द को लेकर जिस तकनीक की चर्चा की गई है, वह प्राणी विज्ञान से जुड़ी है। उसमें जानवरों की मूल कोशिका से मांस विकसित करने की बात कही गई है। निष्चित ही, प्रयोगशालाओं में उस जानवर का मांस बनेगा, जिस जानवर की मूल कोशिका (स्टेम सेल) से वह बनाया जाएगा। ऐसे मांस को 'लैब-मीट' या कुछ और नाम दिया जा सकता है,

लेकिन 'अहिंसा-मीट' नाम किसी भी तरह से उपयुक्त, तर्कसंगत और स्वीकार्य नहीं है। 'अहिंसा' और 'मीट' (मांस), ये दो विरोधी शब्द हैं। 'क्लीन मीट' शब्द भी भ्रामक है। भारत या दुनिया के किसी भी निष्ठावान शाकाहारी परिवार में किसी भी प्रकार के मांस को कभी क्लीन, साफ, शुद्ध या पवित्र नहीं माना जाता है। प्रयोगशाला के मांस को भी 'क्लीन' कहना अनुचित है।

देश-दुनिया में अहिंसक और शाकाहारी जीवनशैली जीने वाले करोड़ों व्यक्ति और परिवार हैं। उन्हें अपने जीवन के संवेदनशील और महत्वपूर्ण विषयों में भ्रांतियाँ पैदा करने वाले शब्दों और विचारों के बारे में चौकन्ना रहना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि ऐसे शब्दों के चक्कर में वे अपने सुविचारित, शुद्ध व सात्विक आहार को दूषित कर बैठें। ऐसे विषय में प्राणी विज्ञान, आहार विज्ञान और समाज विज्ञान के विशेषज्ञों एवं शास्त्रों के विद्वानों से आशा की जाती है कि वे अपनी उपयोगी राय से समाज को सावधान करें।

आज का विज्ञान छोटे से छोटे तथ्य को भी शोध, खोज, अनुसंधान और सर्वेक्षण का विषय बनाता है। वैसी प्रयोगधर्मी चेतना धर्म, दर्शन और अहिंसा के क्षेत्र में भी जागनी या जगानी चाहिए। ऐसा होने से वैज्ञानिक और व्यावसायिक उन्नतियों पर मूल्यात्मक चेतना का अंकुश लग सकेगा। ●

आमचेकडे जामनेरचे स्वादिष्ट पापड (नवकार) आयंबील पापड, केरसांगरीया, बडी, कुरडई, नाचणी व तांदुळाचे खिच्चे, मारवाडचे पापड व चना टिकडी योग्य भावात होलसेल मध्ये मिळेल.

गुलाबचंद मिश्रीलालजी शिंगवी

सिलेस्टियल सिटी, इ - ८०२, फेज नं १, स.नं.७८
रावेत बीआरटी रोड, पुणे - ४१२१०१.
मोबाईल : ९८९०२८०४९७, ९९६०४९८३०२
पुणे डिलेव्हरी : ८०८७८७३५०१

अभिप्रेत

एक रहे, नेक रहे
लेकिन, हमने क्या किया ?
'अ' लगाकर,
अलग-अलग होकर
अनेकों में बँट गए ।
अपना-अपना कार्यभाग साधकर
संप्रदाय में बिखर गए ।
नतीजा,
विघटन और विघटन से
समाज का नुकसान,
कर बैठे ।
भ. महावीर के
अनेकांत सिध्दांत को भूलकर,
मैं और मेरे में उलझ गए ।
समभाव और आत्मभाव को भूल गये ।
साधु-संत तथा सुश्रावकों का
दायित्व है, जिम्मेदारी है
फिर से इसपर,
गहरा विचार हो ।
भ. महावीर और जिनधर्म में
गहरा विश्वास हो ।
भले ही हमारे पंथ-संप्रदाय
अलग हो, लेकिन
हम सब एक है का
समभाव, आत्मभाव
संत-साधु-श्रावक में
एक जैसा हो ।
इसलिए एक रहने का - नेक रहनेका
सबका संकल्प हो ।
समाज का कल्याण हर एक को अभिप्रेत हो ।
उसके लिए सभी समर्पित हो ।
जी - जानसे उसमें सम्मिलित हो ।

कवी : रमणलाल रामचंद सुराणा
नाशिक. मो. ९४०३५१३९३७ ●

कव्हर तपशील - जून २०१९

❖ श्री शंखेश्वर तीर्थ – गुजरात

शंखेश्वर, जिल्हा पाटण गुजरात मधील प्रसिद्ध जैन तीर्थक्षेत्र श्री. शंखश्वर तीर्थ यांची माहिती या अंकात पान नं. ४९ वर दिलेली आहे.

❖ अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव – नाशिक

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा नाशिक येथे आचार्य श्री शिवमुनीजी, युवाचार्य श्री. महेंद्रमुनीजी आदि ७० ठाणा यांच्या सान्निध्यात अक्षय तृतीया पारणा महोत्सवाचे आयोजन करण्यात आले. यात सुमारे ४२५ तपस्वीचे पारणे संपन्न झाले. या महोत्सवात संपूर्ण भारतातून सुमारे दहा हजार जन समुदाय उपस्थित होता.

❖ अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव – चिंचवड

चिंचवड येथील उद्योजक श्री. संतोषजी प्रेमराजजी लुंकड यांनी आपल्या मातोश्री मैनाबाई लुंकड यांच्या २५ व्या वर्षीतप पारणा निमित्त चिंचवड येथे अक्षय तृतीया पारणा महोत्सवाचे आयोजन केले. या कार्यक्रमास तपस्वीरत्न गुरुदेव श्री. विशालमुनी म.सा., सरल आत्मा श्री. महेंद्रमुनीजी म.सा., श्री. परागमुनीजी म.सा., उपप्रवर्तनी प्रवचन प्रभाविका महासती प्रिय साधनाजी म.सा., आगम भारती रिद्धमाजी म.सा., प्रवचन प्रभाविका अमित सुधाजी म.सा. प.पु. मंजुल ज्योतिजी म.सा., चारुप्रज्ञाजी, तप ज्योतस्ना हिमानीजी, आगमवेता श्री वैभवश्रीजी, प्रवचन प्रभाविका जागृतीची म.सा., सरल आत्मा विशुधिजी म.सा. आदी गुरुमहाराज उपस्थित होते. यावेळी ३१ पारणे संपन्न झाले.

❖ जयती जैनम साधना तीर्थ – भिवरी

जयती जैनम् साधना तीर्थ भिवरी येथे भगवान महावीर जन्म कल्याणक व महासाध्वी डॉ. मंजुश्रीजी म.सा. यांचा ५९ वी दिक्षा जयंती निमित्त विविध कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले. यात वर्धमानायतन आरोग्यधाम उद्घाटन, कॅंसर चिकित्सा शिबीर, रक्तदान शिबीर इ. कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले.

❖ मुनोत विहार धाम – उद्घाटन

निगडी पुणे येथील उद्योगपती श्री. राजेंद्रजी कांतीलालजी मुनोत परिवाराने स्व. सौ. विमलबाई मुनोत यांच्या स्मरणार्थ बेल पांढरी फाटा नेवासा जवळ येथे विहारधाम बांधले. या कार्यक्रमास प.पू. चंदनबालाजी म.सा. श्री. पद्मावतीजी म.सा. आदि ठाणा, आमदार बाळासाहेब मुरकुटे, जैन कॉन्फरन्सचे राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. पारसजी मोदी, श्री. सागरजी सांकला इ. अनेक मान्यवर उपस्थित होते.

❖ नगरसेवक श्री. प्रविणजी चोरबेले – निवड

पुणे येथील नगरसेवक व धडाडीचे कार्यकर्ते श्री. प्रविणजी माणिकचंदजी चोरबेले यांची बिबवेवाडी प्रभाग समितीच्या अध्यक्षपदी बिनविरोध निवड झाली. यावेळी चोरबेलेचा सन्मान करताना निवडणूक अधिकारी डॉ. नयना मुंडे, महापौर मुक्ता टिळक आदि मान्यवर.

श्री. प्रविणजी चोरबेले यांची पुणे म.न.पा.च्या क्रिडा समितीच्या पदी निवड झाली आहे.

❖ **जैन कलाकार चित्रकला प्रदर्शन, पुणे**

श्री मनसुखजी छाजेड यांच्या मित्र परिवाराने नवकार आर्ट ग्रुपच्या वतीने दिनांक २१ ते २३ मे पर्यंत जैन समाजातील चित्रकारांसाठी चित्रकला प्रदर्शनीचे आयोजन बालगंधर्व येथील कलादालनात करण्यात आले. या कार्यक्रमाला प्रसिद्ध चित्रकार सुरेश लोणकर, प्रमोद कांबळे, मुरली लाहोटी, मुकीम तांबोळी, सुभाष संचेती, यांच्यासह प्रकाश पारख, प्रवीण चोरबेले, संजय चोरडिया, महेंद्र नहार, आनंद खिंवसरा, सुशील बाफना यांची प्रमुख उपस्थिती होती. राज्यभरातून सुमारे ४० हुन अधीक चित्रकाराने यामध्ये सहभाग घेतला. ४०० हुन अधिक विविध प्रकारची चित्रे या प्रदर्शनी मध्ये लावण्यात आली होती.

❖ **सिद्धी फौंडेशन, पुणे**

सिद्धी फौंडेशन, पुणे तर्फे दरवर्षी २१ मे रोजी स्व. मदनलालजी छाजेड यांच्या स्मरणार्थ भव्य रक्तदान शिबीराचे आयोजन करण्यात येते. यावर्षी २०१९ बाटल्या रक्त संकलित झाले. या कार्यक्रमात विविध क्षेत्रातील कर्तृत्वान व्यक्तीचा सन्मान करण्यात आले. पोलिस निरीक्षक सुनील तांबे, गजानन पवार, उद्योगपती रविंद्र सांकला, राम बांगड, युगा बिरनाळे यांचा विशेष सन्मान करण्यात आला.

❖ **जितो पुणे – आरोकोस्वामी व्हेलमुनी व्याख्यान**

जितो पुणेच्या कॉफी टेबल मीट व बी२बी च्या वतीने प्रसिद्ध संभाषक व शास्त्रज्ञ थाय्रोकेअर कंपनीचे प्रमुख आरोकोस्वामी व्हेलमुनी यांच्या ''रोमान्स वीथ रिक्स'' या संभाषणाचे आयोजन बिबवेवाडी येथील अण्णाभाऊ साठे सभागृहात करण्यात आले. यावेळी त्यांचा सन्मान प्रमुख पाहुणे शोभाताई धारिवाल, जितो महाराष्ट्राचे अध्यक्ष श्री. राजेशजी सांकला, पुणे जितोचे अध्यक्ष श्री. कांतीलालजी ओसवाल यांनी केला.

❖ **व्हीजन कन्स्ट्रक्शन – पुणे**

इंडियन कॉंक्रीट इन्स्टिटट्यूट अँड अल्ट्राटेक (आयसीआय) यांच्या वतीने दर्जेदार बांधकामाबाबत देण्यात येणाऱ्या आउटस्टँडिंग कॉंक्रीट स्ट्रक्चर या प्रथम क्रमांकाच्या पुरस्कारासाठी व्हिजन कन्स्ट्रक्शन या ग्रुप हाऊसींग प्रकल्पाची निवड झाली.

पुणे येथील जे. डब्लू. मॅरिट सभागृहात झालेल्या कार्यक्रमात अल्ट्राटेकचे तंत्र टेक्निकल हेड डॉ. रामचंद्रन, वायटी प्रसाद, कुंटे, अमित हरिदास यांच्या हस्ते व्हिजन कन्स्ट्रक्शनचे शंकर पाटे व विलास सुराणा यांना पुरस्कार प्रदान करण्यात आला.

❖ **श्री. अक्षय संचेती – पुरस्कार**

पुणे येथील संचेती असोसिएटसचे पार्टनर श्री. अक्षय पुखराजजी संचेती यांना टाईम्स ग्रुप तर्फे Emerging Icons of Pune 2019 हा ॲवार्ड देण्यात आला.

❖ **श्री. प्रित बाबेल – पुरस्कार**

पुणे येथील Truth Finder Services Pvt. Ltd. या कंपनीचे MD श्री. प्रितेश चंद्रकांत बाबेल यांना फायनान्स क्षेत्रातील Data Validation या category मध्ये उत्कृष्ट कार्याबद्दल दि. २५ एप्रिल २०१९ रोजी Times तर्फे Times Men of the year Pune 2018 म्हणून हा पुरस्कार बॉलीवूड तारका चित्रांगडा सिंग यांच्या हस्ते ट्रॉफी व सन्मानपत्र देऊन गौरविण्यात आले. ●

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत
पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर,
सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग...
जैन जागृति